SSS NIRWAIR BHAI JI_Layout 1 29-09-2024 03:01 Page 3

राजयोगी भ्राता निर्वैर जी विशेषांक

सुख शांति समृद्धि

RNI NO. :MAHHIN/2012/47712

संपादक : जीतु सोमपुरा

बिनामूल्य पत्रिका प्राप्त करे.....

संत-महात्मा और महानुभावों द्वारा प्रेरणा की विद्यापीठ सुख शांति समृद्धि ई-पत्रिका बिना मूल्य आप के मोबाइल पर प्राप्त करने के लिए मो. **9324446487** और **7977846391** नंबर आप के मोबाइल में दर्ज करने के बाद हमे अपना नाम और स्थान **YES** संदेश के साथ भेजने की कृपा करे।

वर्ष : १२ / हिंदी मासिक / मुंबई अक्टूबर-२०२४ पृष्ठ - ८ मूल्यः रु. २ संपर्क : मो. ९३२४४४६४८७

आप अपने जीवन को बदलना चाहते है तो राजयोगी ब्रह्माकुमार निर्वैर भाईजी के जीवन की गाथा से प्रेरित आठ महत्वपूर्ण बिंदुओं से प्रेरणा ले.....

राजयोगी ब्रह्माकुमार निर्वैर भाई जी का जीवन बाबा के प्रेम और ज्ञान की शक्ति का सजीव उदाहरण था। उन्होंने बाबा की शिक्षाओं को अपने जीवन में पूरी तरह से आत्मसात किया और अपने हर कर्म में दिव्यता को प्रकट किया। भारत के महापुरुषों के श्रद्धांजली संदेश में इसकी गुंज दर्शाती है की उनका जीवन मात्र उपलब्धियों की कहानी नहीं है, बल्कि आत्मा को पोषण देने वाला प्रेमपूर्ण संदेश है, जो हर आत्मा को पूर्णता की ओर ले जाने के लिए प्रेरित करता है। राजयोगी बी.के. करुणा भाईजी का यह लेख निर्वैर भाईजी की जीवन गाथा से प्रेरित आठ महत्वपूर्ण बिंदुओं के माध्यम से हमें अपने जीवन को बदलने और बाबा के प्रेम से पोषण प्राप्त करने का अवसर प्रदान करता है।

१ विनम्रता को अपनाएं और बाबा के साधन बनें

निर्वैर भाईजी विनम्रता के प्रतीक थे और हमेशा अपनी सफलता का श्रेय बाबा को देते थे। उनकी सरलता और शांत स्वभाव ने आत्माओं को उनकी ओर आकर्षित किया और उन्हें वह शांति दी जिसकी उन्हें तलाश थी। अपने श्रद्धांजलि संदेश में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने निर्वैर भाईजी के शांत स्वभाव तथा प्रेम और विनम्रता से भीतर के परिवर्तन की क्षमता की सराहना की। ब्रह्माकुमारीज़ में भाईजी का नेतृत्व उनके पदों से नहीं, बल्कि उनकी शांत, स्थिर उपस्थिति से परिभाषित था, जो उनके हर कार्य में बाबा के प्रकाश को दर्शाती थी।

अपने श्रद्धांजलि संदेश में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने निर्वैर भाईजी के शांत स्वभाव तथा प्रेम और विनम्रता से भीतर के परिवर्तन की क्षमता की सराहना की।

विनम्रता का मतलब यह नहीं है कि शक्ति की कमी है, बल्कि यह समझना है कि असली शक्ति शिव बाबा से आती है। जब हम सच्ची विनम्रता को अपनाते हैं, तो हम भी शिव बाबा की दिव्य शक्ति के माध्यम बन जाते हैं और दूसरों के जीवन में परिवर्तन लाने का साधन बन सकते हैं। जैसे भाईजी ने किया, हमें भी समझना चाहिए कि बाबा के ज़रिए हम अद्भुत शक्ति, शांति और बदलाव के वाहक बन सकते हैं।

२ शुद्ध प्रेम और करुणा से सेवा करें

भाईजी का जीवन सेवा, निःस्वार्थ सेवा पर आधारित था, यह उनके लिए कोई कर्तव्य नहीं, बल्कि शुद्ध प्रेम की अभिव्यक्ति थी। भारत की राष्ट्रपति, श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी ने अपने श्रद्धांजली संदेश में निर्वैर भाईजी के करुणा और ज्ञान से भरे जीवन की प्रशंसा की, जिसने न केवल दूसरों को प्रेरित किया बल्कि आज भी प्रेरित करता है। उनका प्रेम किसी शर्त पर नहीं था, बल्कि हर आत्मा तक पहुँचता था, उन्हें ऐसे पोषण देता था जैसे स्वयं बाबा पालना दे रहे हों। उनकी सेवा केवल ब्रह्माकुमारीज़ परिवार तक सीमित नहीं थी, बल्कि उनके कार्यों के माध्यम से उन्होंने पूरे विश्व में लोगों के जीवन को छुआ।

भारत की राष्ट्रपति, श्रीमती द्रौपदी मुर्मू जी ने अपने श्रद्धांजली संदेश में निर्वैर भाईजी के करुणा और ज्ञान से भरे जीवन की प्रशंसा की है

भाईजी के पदचिन्हों पर चलने के लिए, हमें भी पूरी विनम्रता से उसी प्रेम और करुणा से सेवा करने का प्रयास करना होगा। जब हम प्रेम को दुनिया में बांटते हैं, तो हम शिव बाबा के प्रेम को प्रतिबिंबित करते हैं तथा शांति और उपचार का प्रकाशस्तंभ बन जाते हैं। जैसे भाईजी की करुणा ने आत्माओं को ठीक किया, वैसे ही हमारा प्रेम भी, जब यह दिव्य प्रेम की गहराई से आता है, आत्माओं को ठीक कर सकता है।

३ बाबा में अटूट विश्वास के साथ चलें

निर्वैर भाईजी का ब्रह्मा बाबा पर विश्वास पूर्ण था। उन्होंने अपने हर विचार और हर कर्म को बाबा की इच्छा के अनुसार समर्पित कर दिया था, यह मानते हुए कि वह केवल दिव्य ज्ञान के माध्यम थे। श्री ओम बिड़ला जी ने भाईजी के ब्रह्माकुमारीज़ के प्रति अद्वितीय योगदानों को याद करते हुए कहा कि उनके दृढ़ विश्वास ने ही उनके नेतृत्व और आध्यात्मिक शक्ति की नींव रखी। भाईजी इस विश्वास के साथ जीते थे कि बाबा उनके हर कदम का मार्गदर्शन कर रहे हैं, और इस विश्वास ने उन्हें आंतरिक स्थिरता प्रदान की।

श्री ओम बिरला जी ने भाईजी के ब्रह्माकुमारीज़ के प्रति अद्वितीय योगदानों को याद करते हुए कहा कि उनके दृढ़ विश्वास ने ही उनके नेतृत्व और आध्यात्मिक शक्ति की नींव रखी

विश्वास वह आधार है जो हमें बाबा से जोड़ता है, विशेषकर कठिनाइयों के समय। जब हम इस विश्वास को विकसित करते हैं, तो हम भी भाईजी की तरह जीवन में उसी धैर्य और शांति के साथ चल सकते हैं। उनका जीवन हमें सिखाता है कि हमें बाबा पर पूरा विश्वास रखना चाहिए, यह जानते हुए कि हर चुनौती हमारे दिव्य मार्ग का हिस्सा है।

४ बाबा के प्रेम का प्रतिबिंब बनकर शांति फैलाएं

भाईजी का जीवन बाबा की शांति का जीवंत उदाहरण था। उनकी शांत उपस्थिति से सबसे अशांत हृदयों को भी सुकून मिल जाता था, और उनके हर शब्द में गहरी आध्यात्मिक शांति की शक्ति होती थी। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री जगत प्रकाश नड्डा जी, ने उनके मानवता के प्रति अटूट सेवा की धरोहर की सराहना की, और इस बात पर जोर दिया कि उनके शांत नेतृत्व ने दूर-दूर तक सद्भावना की लहरें पैदा कीं।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष, श्री जगत प्रकाश नड्डा जी, ने उनके मानवता के प्रति अटूट सेवा की धरोहर की सराहना की.....

हमें उनके उदाहरण का अनुसरण करते हुए बाबा की शांति के दूत बनना चाहिए। जब हम शांति को अपने जीवन में धारण करते हैं, तो हम दूसरों को उनके भीतर की दिव्य शांति से जुड़ने का अवसर प्रदान करते हैं। भाईजी की शांति बाबा से प्राप्त अनंत शांति का प्रतिबिंब थी, और जब हम अपने आप को बाबा के प्रेम से जोड़ते हैं, तो हम भी उस शांति के स्तंभ बन सकते हैं, जिसकी इस दुनिया को अत्यंत आवश्यकता है।

SSS NIRWAIR BHAI JI_Layout 1 29-09-2024 03:01 Page 4

प्रेम और प्रकाश की धरोहर मेरे प्रिय भ्राता निर्वैर जी आज भी.....

जब हम राजयोगी ब्रह्माकुमार निर्वैर भाई जी के जीवन पर चिंतन करते हैं, तो हमें यह एहसास होता है कि उनका जीवन केवल उन्हें जानने वालों के लिए ही नहीं, बल्कि उन सभी आत्माओं के लिए एक उपहार था, जो बाबा के प्रेम के प्रकाश की तलाश में थीं। उनका जीवन हम सभी के लिए एक मार्ग दिखाता है-बाबा के प्रेम को अपनाने, विनम्रता और शक्ति के साथ जीवन जीने, और दुनिया को आध्यात्मिक पालना देने का।

यह केवल एक जीवन की कहानी नहीं है, बल्कि हम सभी के लिए यह निमंत्रण है कि हम अपने सच्चे, पूर्ण स्वरूप में कदम रखें, उसी प्रेम से मार्गदर्शित होकर, जिसे निरवैर भाईजी ने इतनी सुंदरता से अपनाया था।

ओम शांति।

बी.के. करुणा

यह केवल एक जीवन की कहानी नहीं है, बल्कि हम सभी के लिए यह निमंत्रण है कि हम अपने सच्चे, पूर्ण स्वरूप में कदम रखें.....

५ हर आत्मा को आध्यात्मिक पोषण दें

निर्वैर भाईजी के पास हर आत्मा को पालना देने का एक अद्वितीय गुण था-आध्यात्मिक पोषण, जिसमें वह हर आत्मा को उसी बिना शर्त के प्रेम से पालते थे, जैसा बाबा हमें देते हैं। महाराष्ट्र के राज्यपाल, श्री सी.पी. राधाकृष्णन जी, ने भाईजी को आध्यात्मिक प्रकाश के रूप में सराहा, जिन्होंने अनगिनत आत्माओं का पोषण किया। उनकी उपस्थिति एक प्रकाशस्तंभ की तरह थी, जो दुनिया की चुनौतियों के तूफानों के बीच आत्माओं को सुरक्षित मार्ग दिखाती थी।

महाराष्ट्र के राज्यपाल, श्री सी.पी. राधाकृष्णन जी, ने भाईजी को आध्यात्मिक प्रकाश के रूप में सराहा...

हमें भी यह पालना देने का प्रयास करना चाहिए। चाहे वह स्नेहपूर्ण शब्दों, सेवायुक्त कर्मों, या मौन आशीर्वाद के माध्यम से हो, हम बाबा के प्रेम को अपने माध्यम से प्रवाहित कर दूसरों का पोषण कर सकते हैं। भाईजी ने हमें दिखाया कि जब हम बाबा की तरह प्रेम करते हैं, तो हम दूसरों को उनकी वास्तविक, शांतिपूर्ण स्थिति तक वापस पहुँचने में मदद कर सकते हैं।

६ प्रेम, शक्ति और धैर्य के साथ नेतृत्व करें

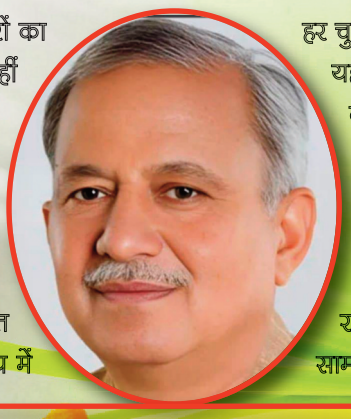

भाईजी का नेतृत्व केवल दूसरों का मार्गदर्शन करने तक सीमित नहीं था; उनका उद्देश्य दूसरों को अपने भीतर की आंतरिक शक्ति को उजागर करने और उसे सशक्त बनाने के बारे में था। भरतपुर के विधायक डॉ. सुभाष गर्ग जी ने अपने संदेश में इस बात पर ज़ोर दिया कि कठिन समय में भाईजी का धैर्य दूसरों को मजबूत बने रहने के लिए प्रेरित करता था। उनकी शक्ति व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा से नहीं, बल्कि बाबा के साथ उनके गहरे संबंध से आती थी।

भरतपुर के विधायक डॉ. सुभाष गर्ग जी ने अपने संदेश में इस बात पर ज़ोर दिया कि कठिन समय में भाईजी का धैर्य दूसरों को मजबूत बने रहने के लिए प्रेरित करता था.....

हर चुनौती के बीच, भाईजी अडिग रहे, यह विश्वास करते हुए कि बाबा का प्रेम उन्हें हर परिस्थिति से पार ले जाएगा।

हम भी यह धैर्य अपने भीतर विकसित कर सकते हैं। जब हम बाबा के प्रेम से जुड़े रहते हैं, तो हमें हर चुनौती का सामना करने की शक्ति मिलती है। भाईजी का जीवन हमें याद दिलाता है कि सच्ची शक्ति आध्यात्मिक शक्ति होती है, जो प्रेम और बाबा पर विश्वास से जन्म लेती है।

७ वैश्विक दृष्टि और आध्यात्मिक सेवा के साथ दुनिया को ऊँचा उठाएं

निर्वैर भाईजी का कार्य ब्रह्माकुमारीज़ परिवार से कहीं आगे तक पहुँचा। मानवता के उत्थान की उनकी गहरी इच्छा ने उनकी वैश्विक दृष्टि को आकार दिया, जो सारे विश्व में अनगिनत योजनाओं और पहलों के माध्यम से साकार हुई। गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल जी, श्री नरहरी अमिन जी और अन्य सम्माननीय वरिष्ठ नेताओं ने उनके अंतरराष्ट्रीय प्रभाव को पहचाना और दुनिया भर में बाबा की शिक्षाओं के प्रसार के प्रति उनकी निष्ठा की सराहना की। उनका कार्य केवल प्रशासनिक नहीं था; यह आध्यात्मिक था, जिसका उद्देश्य शांति और आध्यात्मिक जागरण को दुनिया के हर कोने में पहुँचाना था।

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल जी और अन्य सम्माननीय वरिष्ठ नेताओं ने उनके अंतरराष्ट्रीय प्रभाव को पहचाना और अपने श्रद्धांजली संदेश द्वारा दुनिया भर में बाबा की शिक्षाओं के प्रसार के प्रति उनकी निष्ठा की सराहना की.....

हमें भी अपने दृष्टिकोण को अपने आप से परे विस्तारित करने का आह्वान किया जाता है, ताकि हम दुनिया को एक परिवार के रूप में देख सकें। आध्यात्मिक सेवा के माध्यम से हम वैश्विक सद्भाव और शांति में योगदान देते हैं। जिस प्रकार भाईजी का कार्य दुनिया को प्रभावित करता था, उसी प्रकार हमारे प्रयास, चाहे कितने भी छोटे हों, मानवता को ऊँचा उठाने की क्षमता रखते हैं।

८ बाबा के प्रेम और ज्ञान के शाश्वत साधन बनें

निर्वैर भाईजी की धरोहर केवल उनकी सांसारिक उपलब्धियों का प्रतिबिंब नहीं है, बल्कि यह उस शाश्वत प्रभाव का परिणाम है जो उन्होंने बाबा के साधन के रूप में आत्माओं पर डाला। उन्होंने बाबा के ज्ञान और प्रेम का माध्यम बनकर अनगिनत आत्माओं में परिवर्तन लाया। राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे जी ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर निर्वैर भाईजी के महत्वपूर्ण योगदानों की प्रशंसा की, यह दिखाते हुए कि उनके प्रयास आध्यात्मिक समुदाय से कहीं आगे तक विस्तृत थे।

राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे जी ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उनके महत्वपूर्ण योगदानों की प्रशंसा की, यह दिखाते हुए कि उनके प्रयास आध्यात्मिक समुदाय से कहीं आगे तक विस्तृत थे.....

आज भी, भाईजी हमें मार्गदर्शन देते हैं। उनकी उपस्थिति, भले ही अब शारीरिक रूप में नहीं है, फिर भी ब्रह्माकुमारीज़ परिवार के माध्यम से प्रवाहित होने वाले प्रेम, ज्ञान और मार्गदर्शन में अनुभव की जाती है। जिन आत्माओं को उन्होंने छुआ, उनमें उनके प्रेम की चमक बसी है, और उनकी धरोहर हमें भी अपने जीवन में बाबा के प्रेम और ज्ञान के साधन बनने के लिए आमंत्रित करती है।

दुनिया में सबसे श्रीमंत कौन है?

राजयोगी निर्वैर भाईजीः एक बार बाबा ने लंदन के अखबार में डलवाया था, हू इज द रिचेस्ट इन द वर्ल्ड? फिर दूसरे दिन जवाब में लिखा था, ओम मंडली इज रिचेस्ट इन द वर्ल्ड। किस हिसाब से रिचेस्ट ? क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान अमूल्य रत्नों की खान है। कोई भी ज्ञान की इतनी गहराई नहीं जानता चाहे वह साइंटिस्ट हो या इंजीनियर हो। ज्ञान की ऐसी वैल्यू आपको कब होगी जब आप उसको अच्छी तरह पढ़कर, समझेंगे और फिर उसे जीवन में अप्लाई करेंगे। अप्लाई करने के बाद उसका सुख मिलेगा तो उसको अप्रेशिएट करेंगे। स्टेप बाय स्टेप है। फिर रास्ते चलते लोग आपको रोककर पूछेंगे कि आपको क्या मिला है, आप बड़े खुश नजर आते हैं।

बाबा के संग में रहते रहते हम में भी यही संस्कार आ गयेः भ्राता निर्वैर जी

राजयोगी निर्वैर भाईजीः साकार बाबा ने बारह गुरु किये फिर जब शिव बाबा मिला तो बस सब पा लिया। बाबा में अलौकिक आकर्षण था और बाबा बहुत रॉयल थे। ऐसा हमने प्रैक्टिकल में देखा हुआ है। बाबा के रॉयल संस्कार सदा प्रकट होते थे, बाबा बडे दिल वाले थे और शांति से हर कार्य करते। बाबा कहा करते थे कि जो रॉयल लोग हैं वह भगदड में नहीं होते। बाबा बज बैडमिंटन आदि खेलते थे तो भी आराम से। बाबा के नजदीक रहने से बाबा के बातचीत करने का तरीका, मिलने का तरीका, दृष्टि देकर कैसे मिलना है, सब गहराई से देखा है। बाबा संग में रहते रहते हममें भी यही संस्कार आ गये।

SSS NIRWAIR BHAI JI_Layout 1 29-09-2024 03:02 Page 5

मैंने हर दिन गहरी शांति का अनुभव किया क्योंकि मैंने परमेश्वर के मार्गदर्शन और समर्थन में जीवन जीने का चुनाव किया: राजयोगी निर्वैर भाईजी

२० नवंबर, १९३८ को जन्मे राजयोगी ब्रह्माकुमार निर्वैर भाईजी ने आध्यात्मिक और मानवीय समुदाय में कई महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाईं। उन्होंने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय (पीबीकेआईवीवी) के महासचिव के रूप में कार्य किया और पीबीकेआईवीवी प्रबंधन समिति के एक सम्मानित सदस्य थे। इसके अतिरिक्त, उन्होंने माउंट आबू में स्थित ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के प्रबंध ट्रस्टी के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो स्वास्थ्य और आध्यात्मिकता को बढ़ावा देने के लिए उनकी प्रतिबद्धता का उदाहरण है। उनकी बहुमुखी ज़िम्मेदारियाँ उनके काम के आध्यात्मिक, प्रशासनिक और मानवीय पहलुओं के प्रति उनके समर्पण को दर्शाती हैं।

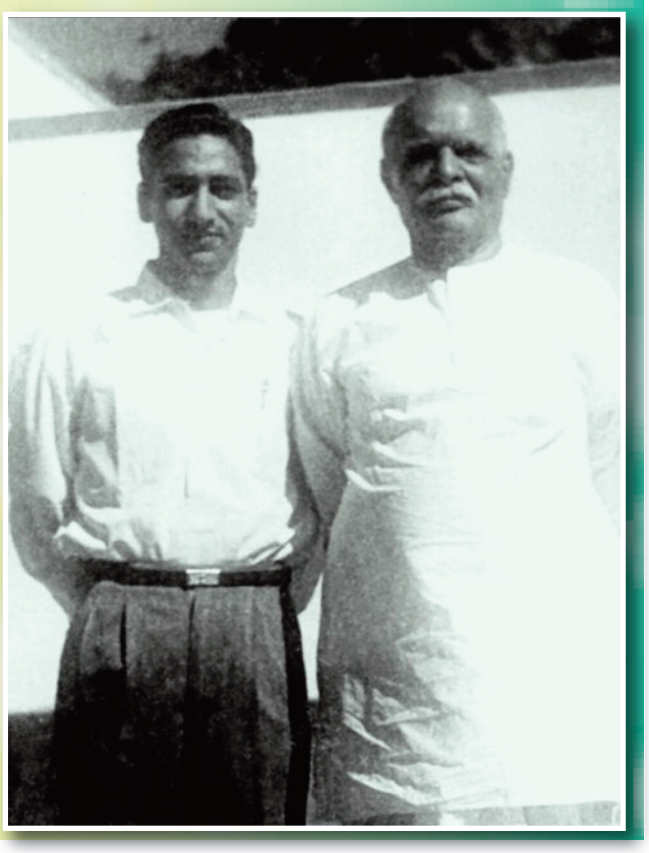

आखिरकार उन्हें वह मिल गया है जिसकी तलाश वे बचपन से कर रहे थे

सत्य के साधक निर्वैर भाईजी प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय (पीबीकेआईवीवी) के छात्र बन गए, जिसे ब्रह्माकुमारी विश्व आध्यात्मिक विश्वविद्यालय (बीकेडब्ल्युएसयु) के नाम से भी जाना जाता है, फरवरी, १९७१ में २० वर्ष की आयु में ब्रह्माकुमारी केंद्र में पहली बार कदम रखने का अनुभव दिल को छू लेने वाला था और इसने उनके अस्तित्व को छू लिया। उन्हें लगा कि आखिरकार उन्हें वह मिल गया है जिसकी तलाश वे बचपन से कर रहे थे: स्वयं, दिव्य सत्ता का सच्चा आध्यात्मिक ज्ञान , और दिव्य के साथ आध्यात्मिक संबंध को कैसे नवीनीकृत किया जाए।

ब्रह्माकुमारीज के संस्थापक ब्रह्मा बाबा और संस्था के अन्य वरिष्ठ सदस्यों के साथ उनके घनिष्ठ, व्यक्तिगत जुड़ाव के कारण, उन्हें नौसेना में सेवा करते हुए आध्यात्मिक रूप से दुनिया की सेवा करने की प्रेरणा मिली। एक दशक की अवधि में ब्रह्मा बाबा के अधीन प्रशिक्षण के दौरान, उन्होंने आध्यात्मिक सेवा करने के विभिन्न तरीके सीखे।

१९६० में शिवरात्रि के शुभ अवसर पर ब्रह्मा बाबा ने बीके निर्वैर जी को नौसेना से एक सप्ताह की छुट्टी लेकर सोमनाथ जाने की सलाह दी, ताकि वे भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू जी से विशेष रूप से मिल सकें, जिन्हें पुनर्निर्मित प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर के उद्घाटन के लिए आमंत्रित

किया गया था। बीके निर्वैर जी व्यक्तिगत रूप से प्रधानमंत्री से मिलने, ब्रह्मा बाबा की ओर से शुभकामनाएं, उपहार और प्रसाद साझा करने और आध्यात्मिक साहित्य भी साझा करने में सक्षम थे।

१९६३ तक , उन्हें स्पष्ट रूप से पता चल गया था कि उन्हें किस मार्ग पर चलना है और इसलिए उन्होंने अपने गुरु और मार्गदर्शक, प्रजापिता ब्रह्मा के मार्गदर्शन में, अपना पूरा जीवन ब्रह्माकुमारीज़ के कार्य के लिए समर्पित कर दिया। इस प्रकार उन्होंने भारत और विदेशों में ब्रह्माकुमारीज़ की शिक्षाओं को फैलाने के लिए एक मूल्यवान और

१३ साल की छोटी उम्र से ही उन्हें दर्शनशास्त्र और धार्मिक पुस्तकों में गहरी रुचि थी

बीके निर्वैर भाईजी का जन्म पंजाब के होशियारपुर में एक अकाली परिवार में हुआ था। १३ साल की छोटी उम्र से ही उन्हें दर्शनशास्त्र और धार्मिक पुस्तकों में गहरी रुचि थी और वे स्वामी विवेकानंद, स्वामी राम तीर्थ, गांधीजी और डॉ. राधाकृष्णन की शिक्षाओं और जीवन से प्रेरित थे।झुमुकेरियां हाई स्कूल से स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने डीएवी कॉलेज, मुकेरियां में उच्च शिक्षा शुरू की, लेकिन देश सेवा की लालसा ने उन्हें २० सितंबर १९५४ को भारतीय नौसेना में भर्ती होने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक्स और इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में प्रशिक्षण लिया और ९ वर्षों तक नौसेना में सेवा करते हुए उन्होंने १९६१ में गोवा मुक्ति आंदोलन में भी भाग लिया।

प्रभावी साधन के रूप में संस्था का प्रतिनिधित्व करने की भूमिका शुरू की। वे पीबीकेआईवीवी द्वारा आयोजित कई कार्यक्रमों, सम्मेलनों, रिट्रीट और सेमिनारों के पीछे दिमाग थे। दूसरों के साथ उनके संपर्क ने लोगों के खुद को देखने के तरीके में जबरदस्त बदलाव लाया, जिसने बदले में उस संस्था को आकार देने में मदद की जिसके प्रति उनकी निष्ठा थी।

मुख्यालय में अनेक उच्च स्तरीय गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, विशेष रूप से:

- महामहिम ज्ञानी जैल सिंह, भारत के पूर्व राष्ट्रपति
- माननीय श्री नरसिंह राव, पूर्व प्रधानमंत्री, भारत
- माननीय डॉ. अब्दुल कलाम, भारत के पूर्व राष्ट्रपति
- माननीय श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री, भारत

स्वयं का साक्षात्कार

राजयोगी भ्राता निर्वैरजी: पहले स्वयं को स्वयं का साक्षात्कार होता है कि वास्तव में मैं कौन सी आत्मा हूँ। मेरा वर्तमान जीवन क्या है और मेरा भविष्य क्या है। मैं कैसे बाबा का वारिस बच्चा हूँ। अनन्य रत्न हूँ, विशेष आत्मा हूँ, पद्मापद्म भाग्यशाली हूँ, स्वदर्शन चक्रधारी हूँ और डबल ताजधारी बनने वाला हूँ। पहले जब स्वयं को स्वयं का साक्षात्कार करते रहेंगे उतना ही मन में रुचि आएगी कि मैं इसमें ही स्थित रहूँ। अपनी मनसा पर, नैनों पर, वाणी पर स्वतः ही कन्ट्रोल होता जाएगा। जितनी बाबा को वैल्यू है हमारे जीवन की, हमारे समय की, हमारे संकल्पो की, वैसी वैल्यू हमें भी रखनी हैं। इससे खुशी भी रहेगी और अतीन्द्रिय सुख में भी रहेंगे।

सभी आपका सम्मान करते हैं क्योंकि आप कहकर सिखाने के बजाए करके सिखाते हैं। आप उदाहरणमूर्त हो।

सुख शांति समृद्धि हिन्दी मासिक समाचार पत्र, स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक: जीतू सोमपुरा ने सोमानी प्रिंटिंग प्रेस, गाला नंबर ७, उद्योग भवन, वालभट्ट रोड, गोरेगांव (पूर्व) मुंबई-४०००६३. से मुद्रित कर ३२, प्रेस इंक्लेव, ६३ वैद्य नगर, दत्तानी स्कूल के सामने, टाटा पावर हाउस, बोरीवली (पूर्व) मुंबई महाराष्ट्र से प्रकाशित किया। संपादक: जीतू सोमपुरा rni no. : MHHIN / 2012/47712

SSS NIRWAIR BHAI JI_Layout 1 29-09-2024 03:02 Page 6

दादी प्रकाशमणि जी के मार्गदर्शन के साथ मुख्यालय में प्रेरणा और प्रबंधन का सफ़ल आरंभ

७ मई, १९७० को निर्वैर भाईजी मुंबई से माउंट आबू स्थित मुख्यालय में चले गए, जहाँ उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ की तत्कालीन प्रमुख राजयोगिनी दादी प्रकाश मणिजी के मार्गदर्शन में प्रशासनिक कार्यालय का प्रबंधन करने में मदद की। दादी प्रकाशमणिजी और बीके निर्वैर जी ने १९६४ से एक साथ सेवा की थी, और इस तरह माउंट आबू में सेवा क्षेत्र में विश्वास का यह प्रेमपूर्ण रिश्ता अगले तीन दशकों तक कायम रहा।इन्हें विशाल विश्व नवीनीकरण आध्यात्मिक प्रदर्शनियों, आध्यात्मिक कला दीर्घाओं, वृत्तचित्र फिल्मों के निर्माण तथा कला में आध्यात्मिकता पर अन्य परियोजनाओं की स्थापना के पीछे प्रेरणा के स्रोत थे।

१९८२ में, उन्होंने संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में आयोजित निरस्त्रीकरण पर दूसरे विशेष सत्र (एसएसओडी) में विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व किया, जहाँ उन्होंने आधिकारिक तौर पर संयुक्त राष्ट्र महासचिव जेवियर

पेरेज़ डी कुएला और अन्य गणमान्य व्यक्तियों से मुलाकात की। अमेरिका, कैरिबियन और यूरोप के २ महीने के सेवा दौरे के दौरान, वे गुयाना के पूर्व उपराष्ट्रपति श्री स्टीव नारायण के अतिथि भी थे।

विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों के विचार नेताओं के साथ आध्यात्मिक ज्ञान साझा करने के प्रयासों में, उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में महासचिव के रूप में कार्य करने की जिम्मेदारी संभाली। माउंट आबू में अंतर्राष्ट्रीय मुख्यालय ने १९८३ से सार्वभौमिक शांति, बेहतर दुनिया के लिए वैश्विक सहयोग, सार्वभौमिक सद्भाव, बदलते समय के लिए आध्यात्मिक प्रतिक्रिया, मूल्य-आधारित समाज के लिए हमारे प्रयास, और कई अन्य विषयों पर ऐसे कई सम्मेलनों की मेजबानी की। कई प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों ने इन सम्मेलनों का उद्घाटन किया: पूर्व राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा, पूर्व प्रधान मंत्री श्री राजीव गांधी, और श्री रॉबर्ट मुलर, दलाई लामा, लॉर्ड डेविड एनल्स और प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जैसे अन्य।

आध्यात्मिकता और करुणामय सेवा का महा संगम राजयोगी निर्वैर भाईजी

निर्वैर भाईजी एक प्रतिभाशाली लेखक और उत्तम वक्ता थे । वे मासिक अंग्रेजी आध्यात्मिक पत्रिका, द वर्ल्ड रिन्यूअल के मुख्य संपादक थे। उन्होंने हिंदी और अंग्रेजी में आध्यात्मिकता पर कई लेख लिखे।

एक प्रखर वक्ता के रूप में उन्होंने दैनिक जीवन में आध्यात्मिकता को अपनाने की व्यावहारिक तकनीकों पर कई व्याख्यान दिए, जिनमें से कई निम्नलिखित पुस्तकों में संकलित किए गए: आध्यात्मिक खजाने और एक राजयोगी की अंतर्दृष्टि।

पुरस्कार: बी.के. निर्वैर भाईजी को कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए, जिनमें शामिल हैं:

- मानवाधिकार एसोसिएशन, दिल्ली, उत्कृष्टता पुरस्कार
- १९९९ में इंटरनेशनल पेंगुइन पब्लिशिंग हाउस द्वारा 'राइजिंग पर्सनालिटीज ऑफ इंडिया अवार्ड'
- वर्ष २००१ के लिए मोरारजी देसाई शांति शिक्षा अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार
- जुलाई, २०१६ में ब्रिटिश संसद में संस्कृति युवा संस्था द्वारा 'भारत गौरव पुरस्कार' प्रदान किया गया

उनका आजीवन मिशन समाज को सम्मान, शांति और कल्याण के जीवन की ओर ले जाना था। उनके अपने शब्दों में:

मैंने हर दिन गहरी शांति का अनुभव किया क्योंकि मैंने परमेश्वर के मार्गदर्शन और समर्थन में जीवन जीने का चुनाव किया।

उन्होंने प्रत्येक को माँ का प्यार और पिता का मार्गदर्शन दिया, तथा प्रेम और शक्ति से उनकी समस्याओं का समाधान किया। बी.के. निर्वैर ने १९ सितम्बर, २०२४ को अपने नश्वर शरीर को त्याग दिया; हमें उनके उस शक्तिशाली सहारे की बहुत याद आएगी, जो अब सूक्ष्म जगत में स्थान पा चुका है।

दादी प्रकाशमणि जी और दादी जानकी जी के दिव्य मार्गदर्शन के साथ मानवता की आध्यात्मिक सेवा के लिए ब्रह्माकुमारीज़ के विभिन्न निर्माण में अमूल्य योगदान

मानवतावादी और लेखक बीके निर्वैर भाईजी ने न केवल आध्यात्मिकता में बल्कि मानवतावाद और लेखन में भी दक्षता दिखाई। मानवता के प्रति उनका निःस्वार्थ प्रेम और सम्मान उनसे मिलने के कुछ ही सेकंड में महसूस किया जा सकता था।

साथी मनुष्यों के प्रति उनकी गहरी चिंता रंग, जाति और पंथ की सभी बाधाओं से परे थी। यह उनके दिमाग की उपज, माउंट आबू में जे वाटुमुल ग्लोबल हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर द्वारा प्रमाणित किया गया, जिसका उद्घाटन अक्टूबर, १९९१ में हुआ, जहाँ उन्होंने प्रबंध ट्रस्टी के रूप में कार्य किया। आज, जीएचआरसी आधुनिक चिकित्सा पद्धति में आध्यात्मिकता को शामिल करके सकारात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है और स्वास्थ्य सेवा का एक आध्यात्मिक मॉडल बनाता है।

इसके बाद ट्रामा सेंटर, नेत्र अस्पताल, नर्सिंग कॉलेज (अबू रोड) का निर्माण तथा अंधेरी, मुंबई में बीएसईएस एमजी अस्पताल का प्रबंधन किया गया, जिसने स्वास्थ्य सेवा का एक नया मॉडल प्रस्तुत किया, जिसमें आध्यात्मिकता और आधुनिक चिकित्सा का एक विवेकपूर्ण मिश्रण प्रस्तुत किया गया।

मानवता की आध्यात्मिक सेवा के लिए ब्रह्माकुमारीज़ के बड़े एकांतवास स्थलों और परिसरों का निर्माण किया।१९७४ से ब्रह्माकुमारीज़ के प्रमुख परिसरों की स्थापना की देखरेख में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है:

ज्ञान सरोवर-एक बेहतर विश्व के लिए अकादमी', माउंट आबू, १९९२-एक सामुदायिक विकास परियोजना जिसमें २५ एकड़ भूमि पर एक पूर्ण ग्राम परिसर शामिल है, जिसमें शामिल हैं:

यूनिवर्सल हार्मनी हॉल, जिसमें १६०० लोग बैठ सकते हैं और १६ से ज़्यादा भाषाओं में एक साथ अनुवाद की सुविधा उपलब्ध है। इसमें हीटिंग और कूलिंग सिस्टम और बेहतरीन ध्वनिकी दोनों की सुविधा है।

२४, ७.५ वर्ग मीटर परवलयिक सौर व्यंजनों की एक पूर्ण मॉड्यूलर सौर भाप खाना पकाने की प्रणाली, जो प्रतिदिन

२,००० भोजन उपलब्ध कराने में सक्षम है।

अंतर्राष्ट्रीय उच्च शिक्षा केंद्र में १३ सेमिनार कक्ष हैं जिनमें ७५-१५० व्यक्तियों के बैठने की क्षमता है।

एक आवासीय परिसर जिसमें ३५०-४०० लोगों के लिए आवास उपलब्ध है।

'शांतिवन' कॉम्प्लेक्स, तलहेटी, अबू रोड (राजस्थान): इसका मुख्य आकर्षण इसका विशाल, विस्मयकारी डायमंड हॉल है, जिसका उद्घाटन दिसंबर १९९६ में संस्था की हीरक जयंती मनाने के लिए किया गया था। कला, वास्तुकला और उपकरणों में शानदार, इसमें २०,००० लोगों के बैठने की क्षमता है! इस कॉम्प्लेक्स में एक मुख्य कॉन्फ्रेंस हॉल, छह छोटे हॉल और आवासीय इमारतें शामिल हैं, जिनमें १५,००० मेहमान रह सकते हैं। इसमें भारत का सबसे बड़ा परवलयिक सौर उपकरण भी है, जो खाना पकाने के लिए भाप से गर्मी प्रदान करता है और पवन ऊर्जा के साथ मिलकर कम्प्यूटर, टेलीफोन एक्सचेन्ज और आपातकालीन प्रकाश व्यवस्था के लिए बिजली प्रदान करता है।

'ओम शांति रिट्रीट सेंटर (ओआरसी)', गोरेगांव (नई दिल्ली के पास)-शांतिपूर्ण वातावरण में बना एक विशाल २८ एकड़ का परिसर, राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली से ७० किमी दूर, भोरा कलां, पटौदी रोड, जिला गुड़गांव में स्थित है। ओआरसी में २०० सीटों वाले सात सेमिनार/प्रशिक्षण हॉल, ८०० सीटोंवाला एक मिनी-ऑडिटोरियम, २,३०० सीटोंवाला एक ऑडिटोरियम, एक ध्यान कक्ष और राजयोग ध्यान के अभ्यास के लिए पिरामिड शामिल हैं।

आध्यात्मिक कला गैलरी', आगरा

'शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर', हैदराबाद

मनमोहिनी वन कॉम्प्लेक्स, आबू रोड

ये सभी रचनाएँ क्रमशः दादी प्रकाशमणि और दादी जानकी जी के दिव्य मार्गदर्शन और आशीर्वाद के तहत थीं।

SSS NIRWAIR BHAI JI_Layout 1 29-09-2024 03:02 Page 7

पवित्रता, शान्ति और प्रेम की प्रतिमूर्ति

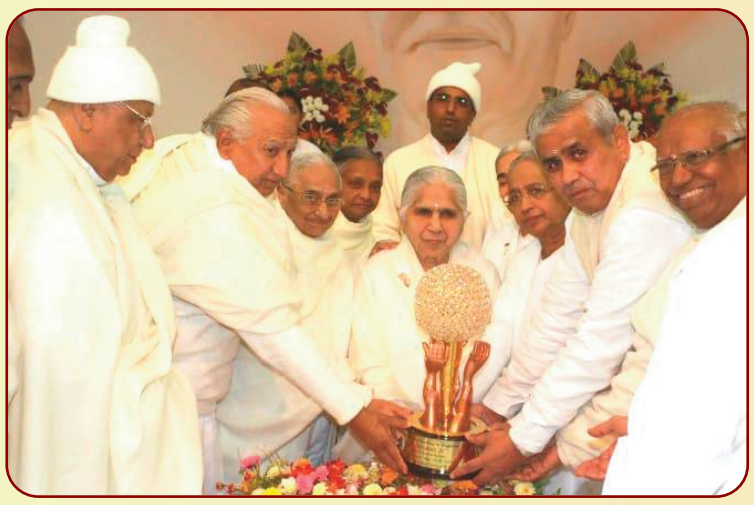

पंजाब में जन्में राजयोगी ब्रह्माकुमार निर्वैर भाई जी ९ वर्ष तक भारतीय नेवी में इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियर के रूप में सेवारत थे। आप सत्य की खोज में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में आयें और यहाँ आकर परमात्मा की गहन अनुभूति की।

प्रारम्भ से ही आप भारत में तथा विदेशों में ब्रह्माकुमारीज़ की सेवाओं के महत्वपूर्ण कर्णधार रहे हैं। संस्थान की अनेकानेक सेवाओं में आपकी अग्रणी भूमिका, चिंतन तथा सहयोग रहा है। आपके कुशल मार्गदर्शन से संस्था के कई सेमिनार, भाषण, महासम्मेलन, शिविर, प्रदर्शनी इत्यादि से अनेक आत्माओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन आया है। आपका अनेक सम्बन्धित परियोजनाओं में अभूतपूर्व योगदान रहा है। मेरा सौभाग्य रहा है कि वर्ष १९६८ में जब मैं आदरणीय भाई साहब के संपर्क में आया तब से मैंने भाईसाहब को बहुत नजदीक से अनुभव किया। शुरुआत के दिनों में हम बाबा मिलन के लिए मधुबन में आते थे, तब से ही आप मुझे अति स्नेह व प्यार की पालना देते हुए बेहद सेवा करने के लिए प्रेरणाएं देते रहते थे। शिक्षा प्रभाग की सेवाओं के आरम्भ में आपने मुझे अपना साथी बनाया और मुझे हर समय बेहद की सेवाओं के महान लक्ष्य देते, प्रेरित करते रहते थे। आपकी प्रेरणाओं के फलस्वरुप ही आज शिक्षा प्रभाग द्वारा अनेकों विश्वविद्यालयों के साथ चेण हस्ताक्षर सम्पन्न हुए तथा विभिन्न कोर्सेज के लिए पाठ्यक्रम विकसित कर पढ़ाये जा रहे है।

विश्व के कोने-कोने में परमात्म अवतरण का सन्देश पहुँचाने हेतु आपने आदरणीय करूणा भाई जी के साथ मिलकर 'पीस ऑफ माइंड टीवी चैनल' का प्रसारण शुरू कराया, जिसके फलस्वरूप सारे विश्व में ईश्वरीय सन्देश पहुँच रहा है। आने वाले समय की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए इस महायज्ञ में समार्पित, स्नेही-सहयोगी भाई-बहनों तथा आम आदमी के स्वास्थ्य लाभ के लिए ईश्वरीय सेवा प्रदान करने के विभिन्न कार्यक्रम आपके निर्देशन में किये जा रहे हैं।

आप दैवी परिवार के हर हृदय के इतने समीप हैं कि सभी आपको अपना समझते थे और अत्यंत स्नेह भरी दृष्टि से देखते थे। आप युगदृष्टा बन बापदादा को प्रत्यक्ष करने में प्राण-प्रण से सेवा में संलग्न रहे। शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता आपकी ही दूरदर्शिता का परिणाम है। आपने अनेक विश्वविद्यालयों में ईश्वरीय विश्वविद्यालय का गौरव पताका फहराया। आपने दिल से सेवा कर सबके दिलों की दुआएं ली हैं।

राजयोगी ब्रह्माकुमार डॉ. मृत्युंजय, कार्यकारी सचिव, ब्रह्माकुमारीज़

राजयोगी निर्वैर भाईजी ने दिल से सेवा कर सबके दिलों की दुआएं ली हैं: बी.के. मृत्युंजय भाई

ब्रह्मा बाबा के कदमों पर चलने वाले वे बिल्कुल बाप समान थे: राजयोगिनी डॉ. नलिनी दीदी

नगमे हैं, शिकवे हैं, किस्से हैं, बातें हैं।
बातें भूल जाती हैं, यादें याद आती हैं।
ये यादें किसी दिल-ओ-जानम के
चले जाने के बाद आती हैं, यादें, यादें, यादें...

जी हाँ, बचपन आपके साथ गुजरा और इस रूहानी बचपन की बातें समय प्रति समय याद आती रहेंगी और आपकी भी साथ में याद लाएगी। हमारे दैवी भ्राता महादानी, वरदानी, विश्व कल्याणकारी, बापदादा के चैतन्य कोहिनूर, निर्वैर भाईजी के लिए आपको क्या बताए। ब्रह्मा बाबा के कदमों पर चलने वाले वे बिल्कुल बाप समान थे। हमारे ज्ञान की एवं समर्पित जीवन की आयु लगभग मिलती हैं। शुरू से ही वे बाबा, मम्मा एवं दादियो के अति समीप रहे। हमारा आपस में भी सदैव बड़ा स्नेह का संबंध रहा। वे यज्ञ के ऐसे बहुमूल्य रतन थे, जिनकी जगह कोई भर नहीं सकते।

राजयोगिनी ब्रह्माकुमारी डॉ. नलिनी दीदी जी

प्रिय भ्राता निर्वैर जी मानवता की शान है

जितना दिव्य नाम है उतनी ऊँची पहचान है
प्रिय भ्राता निर्वैर जी मानवता की शान है
निर्वैर जहां वहां सद्भावना है
निर्वैर जहां वहां प्यार है
निर्वैर जहां वहां दया है
निर्वैर जहां वहां उपकार है
निर्वैर जहां वहां स्नेह दान है
प्रिय भ्राता निर्वैर जी मानवता की शान है
पिताश्री ब्रह्मा बाबा के स्वप्न को साकार किया
विश्व को परिवार मानकर सबको सत्कार दिया
बड़ा भाई होता है घर की छत की तरह
बड़ा भाई होता है ऊँची किस्मत की तरह
हर हृदय में आपके लिए सम्मान है
प्रिय भ्राता निर्वैर जी मानवता की शान है
सत्कर्मों से सबके दिलों पर करते राज हैं
दादियों के प्रिय बाबा के सरताज हैं
अद्भुत शक्ति विश्वास दृढ़ता आपमें समाई
बड़ी दिव्यता से सदा बाबा संग प्रीत निभाई
आपके स्वरूप से प्रत्यक्ष होता भगवान है
जितना दिव्य नाम है उतनी ऊँची पहचान है
प्रिय भ्राता निर्वैर जी मानवता की शान है

- ब्रह्माकुमार डॉ. विवेक

बड़े शौक से सुन रहा था जमाना तुम ही सो गए दास्तां कहते-कहते: बी.के. मनोरमा

राजयोगी भ्राता निर्वैर जी, यथा नाम तथा गुण थे। हर एक को लगता था हमारे चिर-परिचित आत्मीय है। उनका माधुर्य प्रत्येक को खींचता था। उनकी मर्यादाएं, उनका अनुशासन, सागर सी गंभीरता उनकी शान थी। प्रभु ने उनका चयन विश्व कल्याण हेतु किया था। हर कार्य करने में और करवाने में सक्षम थे। दादियों और बहनों के साथ हर कदम पर कदम रखते सुरक्षाचक्र बन साथ रहते थे अद्भुत समाधान मूरत थे। अनेकानेक समस्याएं वैयक्तिक हो या सामाजिक हो सहज समाधान करते, चाहे वह संस्कार जन्य हो या परिस्थिति जन्य हो उन्होंने कभी पराजय नहीं मानी। कभी भी दादी जी को ये अवसर नहीं दिया कि 'वो सोचे क्या होगा, कैसे होगा', वह हर बात का समाधान करने की कला से संपन्न थे। उनकी क्लासों ने देश ही नहीं, विदेश के भाई-बहनों को भी समर्पण की परिभाषा सिखलाई। 'करन करावनहार परमात्मा पर अद्भुत निश्चय उन्हें बेगमपुर का बादशाह बनाये हुए था।' उन्होंने अपनी मनसा, वाणी, कर्म पर संयम का पहरेदार बिठाकर रखा था। सम्मान देने में, स्वमान रखने में प्रवीण थे। हर एक को आदर देने का उनसे सीखने को मिलता था। किसी ने कहा है 'बड़े शौक से सुन रहा था जमाना तुम ही सो गए दास्तां कहते-कहते।' बादशाह बनकर रहे और बादशाह बनकर गए।

बी.के. मनोरमा
राष्ट्रीय अध्यक्षा धार्मिक प्रभाग
प्रभारी प्रयागराज मंडल (उत्तर प्रदेश)

निर्वैर भाईजी, हम आपको आपकी बेमिशाल सेवाओं के लिए धन्यवाद देते हैं: ब्रह्माकुमार हरिलाल

परमात्मा के युग परिवर्तन की इहलीला में स्वयं परमात्मा ही अपने मिशन को आगे ले जाने के लिए जिम्मेदार हैं फिर भी हमें यह महसूस हो रहा हैं की उनके प्लान में कोई नया मोड़ आने वाला हैं। आदरणीय निर्वैर भाई जी ने अपना नश्वर देह त्याग कर बाप दादा की गोद ली। जो उसी दिव्यता का परिचायक हैं। इस समाचार से मेरे मन में उनके साथ बिताये हुए सुनहरे पलों की हज़ारो स्मृतियां सुनहरे रंगों से आलोकित होने लगी। जिनमे से उनका भ्रातत्व प्रेम, मार्गदर्शन के पल, सीखने के पल, प्यार पालना के अमिट क्षण..... ऐसे पलों की लम्बी लिस्ट थी। पहले तो सोचकर यह दुःख हुआ की अब उनसे वह मार्गदर्शन एवं परामर्श प्राप्त नहीं हो पायेगा किन्तु अनतर्मन से जवाब आता हैं की वे तो बाप समान शक्तिशाली आत्मा हैं और सदा हमारे लिए बेहद में उपलब्ध होंगे, अपनी शारीरिक सीमा से परे होके हमारी मदद और मार्गदर्शन देते रहेंगे ख मैं अपने को सौभाग्यशाली मानता हूँ क्योकि मुझे उनका ९१ बर्षो तक एक बड़े भाई का साथ मिला जो किसी आशीर्वाद से कम नहीं है। हालाकि हमारे बीच कभी मतभेद थे परन्तु जब भी वे हमसे मिलते थे तो जरुर मेरी बात सुनते थे और मार्गदर्शन देने के लिए मौजूद रहें। मुझे वो पल सदा याद आते रहेंगे की आपने मुझ पर सदा विश्वास किया और मैंने जो भी कदम उठाये उसका सदैव ही समर्थन किया ख मुझे वो पल भी याद आयेंगे जब आदरणीय रमेश भाई जी के बाप दादा के गोद लेने के बाद आपने बड़े भाई की कमी पूरी की। मैं और गॉडली वुड स्टूडियो की टीम को आप सदा याद आयेंगे क्योकि गॉडली वुड स्टूडियो के दस साल के जश्न अक्टूबर २०२२ में आपका आना और हमारा उत्साह वर्धन करना वो अविस्मरणीय क्षण कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। आप स्टूडियो के हर गतिविधियों के शक्ति एवं प्रेरणा के स्रोत थे। हम आपको आपकी बेमिशाल सेवाओं के लिए धन्यवाद देते हैं तथा आपके आगे की यात्रा के लिए शुभकामनाएं देते हैं।

SSS NIRWAIR BHAI JI_Layout 1 29-09-2024 03:02 Page 8

निश्छल प्रेम के निशान छोड़ गए निर्वैर भाई जी

निर्वैर भाई का अतुलनीय सहयोग आदरणीय है : राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालयकी मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी रतनमोहिनी जी ने महासचिव निर्वैर जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा की उन्होंने ईश्वरीय विश्व विद्यालय में अतुल्य सहयोग दिया है। उनका सहयोग आदरणीय है तथा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय और सारा परिवार निर्वैर भाईजी के स्नेह और सहयोग को आदर भाव से याद करेगा।

इतना बड़ा कारोबार संभालते हुए भी निर्वैर भाई जी सदा रिलेक्स रहते थे : राजयोगिनी बी के जयंती दीदी

ब्रह्माकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके जयंती दीदी जी: निर्वैर भाईसाहब के मार्गदर्शन में विश्वभर में सेवाएं की। उन्हें बचपन से ही जानती थी। आप एक-एक भाई-बहन से पूरी विनम्रता और आत्मीयता के साथ मिलते थे। सभी के लिए समय देते थे, सभी बातें सुनते और सकारात्मक प्रेरणाएं देते थे। आपका जीवन दिव्यता से भरपूर रहा। आप ब्रह्माकुमारीज़ परिवार की शोभा थे। इतना बड़ा कारोबार संभालते हुए भी आप सदा रिलेक्स रहते थे।

निर्वैर भाई ने अपने दिव्य जीवन से सभी के लिए प्रेरणा दी : बीके बृजमोहन भाई

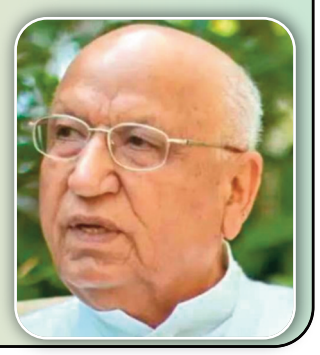

अतिरिक्त महासचिव बीके बृजमोहन भाई : निर्वैर भाईजी का जीवन रॉयलटी की मिसाल था। उन्होंने अपने दिव्य जीवन से सभी के लिए प्रेरणा दी। पूरी उम्र लोगों की भलाई के लिए समर्पित कर दि।

निर्वैर भाईजी की शिक्षाएं और आदर्श जीवन सदा याद रखा जाएगा : बी.के. मुन्नी दीदी

ब्रह्माकुमारीज़ की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बीके मुन्नी दीदी: ब्रह्माकुमारीज़ का मैनेजमेंट संभालने में निर्वैर भाईजी ने हमेशा साथ दिया। समय प्रति समय मार्गदर्शन दिया। आपकी सलाह से कई बड़ी-बड़ी सेवाओं को मूर्तरूप दिया गया। आपकी शिक्षाएं और आदर्श जीवन सदा याद रखा जाएगा।

निर्वैर भाईजी के पास से समाधान मिल जाता था: बी.के. सुदेश दीदी

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालयकी संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी बी.के. सुदेश दीदी ने कहा कि निर्वैर भाईजी के सामने कोई कैसी भी समस्या लेकर जाए तो उसे समाधान मिल जाता था।

भ्राता निर्वैर जी का महान जीवन हमेशा प्रेरणामूर्त रहेगा: दीदी शशिप्रभा जी

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालयकी संयुक्त प्रशासिका दीदी शशिप्रभा जी ने अपने ७० वर्षों की यात्रा में भ्राता निर्वैर जी के साथ को स्मृति में लाते हुए कहा भ्राता निर्वैर जी से हमने हर कार्य को आध्यात्मिक शक्ति से भरकर कैसे किया जाता है इसे सीखा और भ्राता निर्वैर जी का महान जीवन सदा ही सब के लिए प्रेरणामूर्त रहेगा।

हमारे कर्णधार बनकर निर्वैर भाईजी ने समग्र यज्ञ को गौरव प्रदान किया : ब्रह्माकुमार अशोक भाई जी

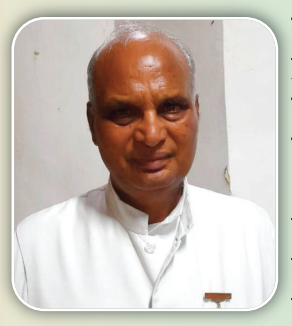

ब्रह्मा बाप की छबी अपने नैनो में समाये निर्वैर भाईजी का सानिध्य पाकर हमने साकार बाबा के सानिध्य का अनुभव किया। बाबा की शिक्षा द्वारा, बाबाकी तपस्या द्वारा निर्वैर भाईजी हमें जीवन की ऊंचाई पर लाए। हमारे कर्णधार बनकर निर्वैर भाईजी ने समग्र यज्ञ को गौरव प्रदान किया। हमारे भाई बहन छुट्टी लेकर जब भी विदेश जाते थे तब निर्वैर भाईजी ब्रह्मा बाबा की तरह हाथ से रुमाल हिलाते हुए अपने नैनो से स्नेह बांटते थे वो हमें आज भी याद आ रहा है। वो दिन दूर नहीं जब हम सब पंछी की तरह उड़कर वतन में जाएंगे। नई सुवर्ण दुनिया को जल्द लाने में हम भी तन मन धन से सहयोगी बनेंगे। निर्वैर भाईजी के निर्देश अनुसार शेष श्वास सेवा में समर्पित करेंगे। आइए एक मिनिट के लिए मौन रहकर हम सब निर्वैर भाईजी को सच्चे हृदय से श्रद्धांजली दे।

निर्वैर भाई की प्रेरणा से ही जे बाटुमल ग्लोबल हॉस्पिटल बना: बी.के. डॉ. अशोक मेहता

ब्रह्माकुमारीज़ मेडिकल विंग के अध्यक्ष मुंबई के वरिष्ठ डॉक्टर अशोक मेहता: मैंने जब निर्वैर भाई से कहा कि संस्थान में मेडिकल सुविधा शुरू होनी चाहिए तो उन्होंने कहा था कि आप संभालो तो शुरू कर देंगे। इस तरह उन्होंने हॉस्पिटल की शुरुआत की। आपकी प्रेरणा से ही जे बाटुमल ग्लोबल हॉस्पिटल बनाया गया।

गलती करनेवालो के प्रति निर्वैर भाई का दृष्टिकोण सकारात्मक रहता था: बीके डॉ. प्रताप

ग्लोबल हॉस्पिटल के निदेशक डॉ. प्रताप मिश्रा: वर्ष १९९७ में पहली बार निर्वैर भाईजी से मुलाकात हुई। उनमें दयालुता का गुण भरा हुआ था। वह हर कार्य रायल तरीके से करते थे। उनका हर चीज को लेकर दृष्टिकोण बहुत सकारात्मक रहता था। उनसे जीवन में कई बातें सीखी हैं। जो गलती करता था उसके प्रति भी उनका दृष्टिकोण सकारात्मक रहता था। मेरे लिए वह हमेशा अबेलेवल होते थे।

शास्त्रों के ज्ञान का सार किस में ?

राजयोगी भ्राता निर्वैर जी: सभी शास्त्रों के ज्ञान का सार शिव बाबा ने ब्रह्मा के मुखारविंद द्वारा मुरली के रुप में वर्णन किया।

हमें बाबा समान बनने का दृढ़ संकल्प करना है: भ्राता निर्वैर जी

राजयोगी निर्वैर भाईजी: जब ज्ञानवान हो गये तो हर रोज अपने को देखो कि मेरी कितनी उन्नति हो रही है। जब बाबा को पहचान लिया तो बाबा समान बनने का दृढ़ संकल्प करना है। जितना बाबा में ज्ञान है उतना ज्ञान मेरी भी बुद्धि में होना चाहिए। जितनी धारणा बाबा की है उतनी धारणा मेरी भी हो।

भ्राता निर्वैर जी: हमारी दिनचर्या.....

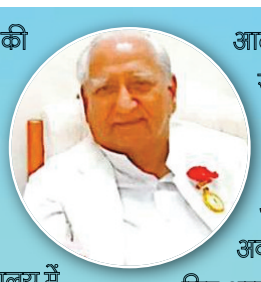

भ्राता निर्वैर जी: विश्व विद्यालय में पढ़ने वालो का लक्ष्य होता है। उसी अनुसार पढ़ाई होती है। इस पर जब मैं विचार करता हूं कि बहुत मनोवैज्ञानिक ढंग से बाबा ने हमारी दिनचर्या बनाई हुई है।

बाबा की बातें दिल में ऐसे समा सकती हैं: भ्राता निर्वैर जी

मुख का मौन मदद करता है मन का मौन रखने के लिए आवाज मन बुद्धि को अपनी तरफ खींचती है। हम आत्माओं को अपनी सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करने के लिए, सच्चा अतीन्द्रिय सुख अनुभव करने के लिए, अव्यक्त स्थिति में जाने के लिए शब्दों से दूर जाना पड़ता हैं। जब साइलेंस में होते है तो बाबा की सुंदर मीठी गहरी संपन्बनानेवाली बातें दिल में समा सकते हैं।

मुरली का प्रभाव और परिवर्तन: भ्राता निर्वैर जी

भ्राता निर्वैर जी: मुरली का प्रभाव हमारी सोच, हमारे मन पर पड़ता था, हमारे व्यक्तित्व पर पड़ता था, हमारे व्यवहार पर पड़ता था। उसके बाद हम जिन लोगों के साथ रहते उन्हें हमारे अंदर परिवर्तन देखकर आश्चर्य लगता। खानपान शुद्ध, बोलचाल में शालीनता एवं मिठास आ गई। बड़ों का रिस्पेक्ट रखना, साथियों का मन रखना यह सब बातें हम धीरे धीरे सीखते गए। हमारे परिवर्तन के बाद हम जिनके साथ कार्य करते उनका व्यवहार भी हमारे लिए परिवर्तन हो गया।

भ्राता निर्वैर जी: क्या बनना है ? गुण चोर या अवगुण चोर

राजयोगी निर्वैर भाईजी: किसी में यदि कोई गुण है और हमने फिल किया कि यह गुण बहुत अच्छा है तो उसे अपना लेना चाहिए। गुण चोर बनना अच्छा है लेकिन किसी का अवगुण चोर नहीं बनना।

आभार

राजयोगी निर्वैर भाईजी श्रद्धांजली विशेषांक के प्रेरक मार्गदर्शक राजयोगी बी. के. करुणा भाईजी का सुख शांति समृद्धि पत्रिका परिवार आभारी हैं।

SSS NIRWAIR BHAI JI_Layout 1 29-09-2024 03:02 Page 9

शरीर को छोड़ना कमरे बदलने के समान है, यह कभी नहीं सोचना कि बाबा चले गये है

८ वे पृष्ठ से क्रमशः

यदि आप रोज़ाना आठ घण्टे योग करते हो तो आप अपने कर्मों के हिसाब-किताब को पूरा चुक्ता कर सकते हो।

एक बार मैंने बाबा को लिखा कि मैं दो मास के लिए खाली हूँ, आप मुझे सेवा के लिए कहीं भी भेज सकते हैं। साथ ही यह भी लिखा कि मैं एक सेवाकेन्द्र खोलना चाहता हूँ। बाबा जानते थे कि यदि यह कोई सेवाकेन्द्र खोल लेगा तो बंध जाएगा, तो बाबा ने लिखा कि सेवाकेन्द्र खोलने की चिन्ता मत करो। यह कार्य तो अन्य लोग भी कर लेंगे। तुम केवल उनकी संभाल करो जो पहले से खुले हुए हैं। मुझे अब यह अनुभव होता है कि बाबा मेरे भविष्य के बारे में जानते थे और मुझे बंधन-मुक्त रखना चाहते थे। मैने अपने लौकिक कार्य का इस तरह से प्रबन्धन किया कि मैं सप्ताह के बीच में एक दिन व सप्ताह के अंत में अलौकिक सेवा के लिए समय निकाल लेता। बाबा समाचार-पत्रों की सेवा करने की बहुत युक्तियाँ बताया करते थे इसलिए मैंने छुट्टी के समय समाचार-पत्रों के दफ्तरों में जाकर वहां के लोगों से दोस्ती करना शुरू कर दिया। शनिवार को हम लोग पार्क व पर्यटन की विशेष जगहों पर पर्चे बाँटने जाते थे। रविवार को हमें भक्त आत्माओं की सेवा के लिए मन्दिरों में जाना होता था। बाबा कहते थे कि श्री श्री शिव, श्रीकृष्ण व श्रीलक्ष्मी श्रीनारायण के मन्दिर में हमें दैवी घराने की आत्माएँ मिल सकती हैं। धीरे-धीरे मुझे ऐसा लगने लगा कि मुझे इतना ही नहीं, परन्तु पूरा ही समय ईश्वरीय सेवा में देना चाहिए। उन छुट्टियों में मेरा सेवा के निमित्त जयपुर जाना हुआ। यह अपने आप में एक श्रेष्ठ अनुभव था। लौटते वक्त मैं मम्मा व बाबा से मिला और मैंने लौकिक कार्य छोड़ने की इच्छा ज़ाहिर की जिससे कि मैं पूरा ही समय ईश्वरीय सेवा में दे सकूँ। मम्मा ने कहा कि यह बहुत अच्छा ख्याल है। एक व्यक्ति को जीवन में चाहिए ही क्या? दो कपड़ों के जोड़े व दो समय भोजन, जो यज्ञ से मिल सकता है।

मैंने सन् १९६३ में नेवी छोड़ने का आवेदन दिया। बाबा ने मुरली में कहा था कि यदि आप रोज़ाना आठ घण्टे योग करते हो तो आप अपने कर्मों के हिसाब-किताब को पूरा चुक्ता कर सकते हो। मैंने इसका प्रयोग शुरू किया और रोज़ सुबह आठ से बारह बजे तक व शाम को चार से आठ बजे तक योग लगाना शुरू कर दिया। दोपहर के समय मैं मुरली को अन्य भाषाओं में लिखकर बुजुर्ग माताओं को मदद करता था। इस प्रयोग का मुझे सुखद फल मिला और मुझे नेवी से छुट्टी मिल गई। नौकरी छोड़ने के बाद करीब तीन मास तक मुझे बाबा के अंग-संग रहने का अवसर मिला और साथ ही साथ दादा विश्वकिशोर से समय प्रति समय मार्गदर्शन मिलता रहा।

जब तक कोई ईश्वरीय सेवा नहीं करो, तब तक आपको नाश्ता नहीं करना चाहिए

बाबा कहते थे कि बच्चे, जब तक कोई ईश्वरीय सेवा नहीं करो, तब तक आपको नाश्ता नहीं करना चाहिए। तो मैं मुरली खत्म होने के बाद पास के पार्क में सेवा के लिए जाया करता था। एक बार मैंने किसी आत्मा को त्रिमूर्ति के बारे में समझाया, परन्तु जल्दबाज़ी में गोलमाल करके समझाया। जिसको ज्ञान समझाया, वो क्रिश्चियन थी। उसने ब्रह्मा बाबा की तरफ संकेत करके पूछा कि ये कौन व्यक्ति हैं। मैंने ब्रह्मा, विष्णु व शंकर का परिचय दिया और कहा कि ब्रह्मा के द्वारा परमात्मा नई दुनिया की रचना करते हैं परन्तु उस बहन की बुद्धि में यह स्पष्ट नहीं हुआ कि यह कार्य अभी ही हो रहा है। जब मैं वापस बाबा के पास आया, तो रोज़ की भाँति, ज्ञान-चर्चा के दौरान जो हुआ वो बाबा को बताया। बाबा सुनकर, ज्ञान कैसे देना चाहिए, यह हमें समझाते थे। इस बात को मैंने जब बताया तो बाबा ने कहा कि तुम्हें बोलना चाहिए था कि सर्वोच्च परमपिता परमात्मा अब ब्रह्मा बाबा के द्वारा ज्ञान दे रहे हैं और यदि तुम ऐसा कहते तो वह आत्मा बाबा से वर्से का जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त कर लेती। मैंने बाबा से क्षमा चाही और अगले दिन एक अन्य बुजुर्ग भाई ने जब यही प्रश्न पूछा तो मैंने ब्रह्मा बाबा का स्पष्ट परिचय देते हुए कहा कि अब इन्हीं के द्वारा परमात्मा ज्ञान सुना रहे हैं।

उसने पूछा कि बाबा अब कहाँ हैं? मैंने कहा कि मुम्बई में ही है, तो उस आत्मा ने बाबा से मिलने की इच्छा जाहिर की। मैंने कहा कि बाबा से समय लेकर अगले दिन आपको बता देंगे। अगले दिन शाम को वह बाबा से मिलने आया। बाबा ने उसको पास बिठाया और कहा कि आप भी बाबा की तरह ही हो, एकदम पिता की तरह। बाबा का तन भी पुराना है और आपका तन भी बाबा की तरह पुराना है। साधारणतया गुरु लोग अपने चेलों आदि को पास में नहीं बिठाते, परन्तु बाबा ने उसे पास बिठाकर इस बात का अनुभव करवा दिया कि हम दोनों ही ईश्वर के बच्चे हैं। बाबा ने उसे ज्ञान समझाया और उस दिन से वह रोज़ क्लास करने लगा।

ऐसे गीत मन ही मन गुनगुनाते रहो...

राजयोगी निर्वैर भाईजी: कितना मीठा कितना प्यारा शिव भोला भगवान..... ऐसे गीत मन ही मन गुनगुनाते रहो तो अंदर ही अंदर रस मिलता रहेगा।

जीवन अमूल्य कब बनता है?

राजयोगी निर्वैर भाईजी: ईश्वरीय ज्ञान की धारणा से जीवन अमूल्य बन जाता है। नर से श्री नारायण समान और नारी श्री लक्ष्मी समान बन जाते हैं।

अगर संकल्प श्रेष्ठ है तो?

राजयोगी निर्वैर भाईजी: अगर संकल्प श्रेष्ठ है तो वाणी भी श्रेष्ठ होगी। दृष्टि भी श्रेष्ठ होगी। और कर्म भी श्रेष्ठ होंगे। इसलिए संकल्पों के ऊपर पूरा अटेंशन।

शक्ति सर्वशक्तिमान शिव बाबा से मिलेगी : भ्राता निर्वैर जी

राजयोगी निर्वैर भाईजी : बाबा कहते कि ब्रह्मा बाबा तो आप सब के सामने केवल निमित्त उदाहरण है कि उन्हें ऐसा जीवन बनाना है, दिव्यता लानी है, फरिश्ता समान बनना है। लेकिन शक्ति सर्वशक्तिमान शिव बाबा से मिलेगी।

चिंता नहीं करनी है कि नींद जल्दी आजाए: निर्वैर भाईजी

राजयोगी निर्वैर भाईजी : निद्राजीत माना जब आप चाहे नींद को ला सके। निद्राजीत बनने के लिये जिस समय सोने का समय है उस समय आराम कीजिये और जिस समय तपस्या का टाइम है उस समय तपस्या कीजिये। रात को १० बजे सो जाएं तो ५-६ घंटे के बाद फ्रेशनेस आ जाती है। जब सोने का समय है उस समय माइंड हल्का होना चाहिए, चिंता नही करनी है। इस बात की भी चिंता नहीं करनी है कि नींद जल्दी आ जाए। सब बातों को एक तरफ करके बाबा को कहें मैं आपकी गोद में आकर सो रहा हूं। गुड नाइट बाबा। जिस समय उठना है तो बाबा को बता दें, बाबा उठा देगा।

निर्वैर भाईजी : सब से श्रेष्ठ कार्य कौनसा?

राजयोगी निर्वैर भाईजी: इस अमूल्य जीवन में सब से श्रेष्ठ कार्य है स्वयं को जानना, सेल्फ रिलाइजेशन। दूसरा ईश्वर को प्राप्त करना गॉड रिलाइजेशन

सम्पूर्ण स्थिति की तीन निशानियां हैं: राजयोगी निर्वैर भाईजी

राजयोगी निर्वैर भाईजी: सम्पूर्ण स्थिति की तीन निशानियां हैं। संकल्प से लेकर स्वप्न तक शुभ ही शुभ। कर्मेंद्रियों पर पूरा कन्ट्रोल और निरंतर शिव बाबा की याद। सदा यही समझें कि मै विजयी आत्मा हूँ। मैं नंबर वन में आनेवाले हूँ। यदि नम्बर वन के गुण कर्तव्य विशेषताएं धारण करते जाएंगे तो नम्बर वन में आयेंगे। सिर्फ़ कहने और सोचने से नहीं।

भ्राता निर्वैर जी : सफलता कैसे मल्टीप्लाई होती है?

राजयोगी निर्वैर भाईजी: यदि आपने सफलता पाई है तो मन में यही आए बाबा आपने कितना अच्छा सफलता का वरदान दिया है जिसके फलस्वरूप हम सफल हुए है। अपने पुरुषार्थ में भी जो सफलता है वो भी सरेंडर। फिर देखो सफलता कैसे मल्टी प्लाई होती है।

आध्यात्मिकता क्या है?

राजयोगी भ्राता निर्वैर जी: जीवन जीने की कला है आध्यात्मिकता। आत्मा के उत्थान के लिए जो ज्ञान चाहिए, अभ्यास चाहिए, वह है आध्यात्मिकता।

शिव बाबा का कोई महान कार्य करने के लिए वे यहां से गए हैं : बी.के. सूरजभाई

राजयोगी बी के सुरज भाई: ब्रह्माकुमारी संस्थान के सेक्रेटरी जनरल निर्वैर भाईजी उस दौर में यज्ञ से जुड़े जब पढ़ी लिखी व्यक्ती के लिए जुड़ना एक चुनौती था। उनके आने से यज्ञ की सेवा में चार चांद लग गए। उन्होंने हमें जीवन में छोटी छोटी बाते भी सिखाई। इस यज्ञ भवन को सजाया, संवारा। कई सुविधाएं स्थापित की। उनकी श्रेष्ठ प्रेरणाओं से भिन्न भिन्न सेवाएं हुई। उनकी कई बड़ी बातों में एक बात यह थी की वे हरेक के प्रति सद्भावना रखते थे। कभी भी नकारात्मक प्रत्युत्तर उनमें नहीं दिखता था। उनकी नजर हमेशा सुंदर भविष्य पर रहतीं थी। शरीर ने भी उनकी काफी परीक्षा ली फिर भी सब को सहयोग देना उन्होंने नहीं छोड़ा। वे स्वयं भगवान से जुड़े रहे और भगवान उनसे जुड़े रहे। शिव बाबा का कोई महान कार्य करने के लिए वे यहां से गए हैं और कोई बड़ा योगदान करेंगे।

बी. के. अशोक उपाध्याय | माताजी बी. के. शरवती उपाध्याय

हम आभारी है इस अंक के सहयोगी के

SSS NIRWAIR BHAI JI_Layout 1 29-09-2024 03:02 Page 10

राजयोगी निर्वैर भाई जी - अनुभवगाथा

आपको मन की शांति अनुभव करने की इच्छा है? आप आत्मा व परमात्मा के बारे में जानने के इच्छुक हैं?

यह मेरे लिए एक सेमी-ट्रांस का अनुभव था.....

मैंने मम्मा के साथ छह साल व बाबा के साथ दस साल व्यतीत किये। उस समय मैं भारतीय नौसेना में रेडियो इंजीनियर यानी इलेक्ट्रोनिक इंजीनियर था। मेरे नौसेना के मित्रों ने मुझे आश्रम पर जाने के लिए राजी किया था। वहाँ बहनजी ने बहुत ही विवेकपूर्ण और प्रभावशाली तरीके से हमें समझाया। चार दिन बाद हमें योग करवाया। योग का अनुभव बहुत ही शक्तिशाली व सुखद था क्योंकि हम तुरंत फरिश्ता स्टेज में पहुँच गये थे।

शुरू में हमें यह अद्भुत-सा लगा कि योग में आँखें खोलकर, भकुटि के बीच में कैसे देखें और मुझे काफी संकोच-सा हुआ परन्तु दो मिनट बाद जब जादुई मंत्र - मैं एक पवित्र आत्मा हूँ, शान्त स्वरूप आत्मा हूँ व मेरा संबंध परमपिता परमात्मा से है, की पुनरावृत्ति हुई तो मेरा मन बहुत शांत हो चुका था और मेरे लिए यह एक बहुत मीठा अनुभव था। मुझे तो ऐसा लगा कि पूरा कमरा सफेद लाइट से भर गया है। कारपेट भी जो लाल रंग का था, सफेद नजर आने लगा। यह मेरे लिए एक सेमी-ट्रांस का अनुभव था। सेवाकेन्द्र में जाते लगभग चार सप्ताह ही हुए थे कि मम्मा के वहाँ आने का सौभाग्य हमें मिला। हमें उनकी मुम्बई की यात्रा का पूरा-पूरा लाभ मिल सके, उसके लिए उनके विशेष प्रवचनों का प्रबन्ध करवाया गया। प्रत्येक शाम ५:०० से ६:०० बजे तक मम्मा की क्लास हुआ करती थी। मम्मा के मुंबई में रहने से हमारी नींव बहुत मजबूत हो गयी। मम्मा क्लास सीधा नहीं शुरू करवाती थीं। मुरली के पहले योग हुआ करता था जो अपने आप में एक मधुर अनुभव था। हम लोग मम्मा से पूछा करते थे कि आप हमारे मन के प्रश्नों को कैसे जानती हैं। वे कहती थीं कि मैं तो सिर्फ योग में बैठती हूँ और जो भी मेरे मन में आता है उसे बोल देती हूँ। मुझे यह ज्ञान इतना रमणीक लगा कि मुझे जो कोई भी मिलता था, मैं उससे पूछा करता था कि आपको मन की शांति अनुभव करने की इच्छा है? आप आत्मा व परमात्मा के बारे में जानने के इच्छुक हैं? प्रायः जवाब 'हाँ' ही होता और चूंकि सेवाकेन्द्र पास में ही था, मैं उनको इन्चार्ज बहन जी से मिलवाता था। इस प्रकार एक मास में करीब ४० स्टूडेण्ट हो गये थे और ८ सीनियर स्टूडेण्ट हो गये थे।

इस तरह पिताश्री हम बच्चों की ज्ञान-रत्नों से पालना किया करते थे ताकि हमारा आध्यात्मिक पुरुषार्थ बढ़ सके

सब समाचार बाबा को पत्र द्वारा भेजे जाते थे। उन दिनों डाक विभाग की सेवा बहुत अच्छी थी। प्रति शाम मुम्बई से पत्र लिखा जाता था और अगले दिन मधुबन में मिल जाता था। रोज़ कोई न कोई रेल में जाकर पत्र छोड़ आता था। दूसरी तरफ, बाबा का भी मुरलियों द्वारा पत्र-व्यवहार बहुत अच्छा चलता था। मैं बाबा को रोज़ पत्र लिखा करता था। हम दोनों ने आपस में ऐसे पत्र लिखना शुरू कर दिया जैसे कि प्यार होने पर कोई आपस में लिखते हैं। बाबा अपनी कहानियाँ लिख कर मुझे प्रेरित करते थे और मैं बाबा को लिखे बिना रह नहीं सकता था। यदि मैं दो पेज लिखता था तो बाबा मुझे चार पेज लिखा करते थे और मैं यदि चार पेज लिखता तो बाबा छह। बाबा के पत्रों में नई मुरलियों के प्वाइंट हुआ करते थे। इस तरह पिताश्री हम बच्चों की ज्ञान-रत्नों से पालना किया करते थे ताकि हमारा आध्यात्मिक पुरुषार्थ बढ़

निर्वैर भाईजी ने अपने भविष्य का निर्णय कब लिया?

बाबा से प्रथम मिलन सन् १९७१ में (ज्ञान में चलने के ६ मास बाद) मेरा पहली बार मधुबन आना हुआ। मुझे ब्रह्मा बाबा के द्वारा शिवबाबा से सम्मुख मिलन मनाना था। बाबा से यह मुलाकात इतनी प्रेरणादायक व प्रभावशाली थी कि मैंने अपने भविष्य का निर्णय उसी वक्त ले लिया था। जब हम बाबा के कमरे में गए तो हमने देखा कि बाबा एक गद्दी पर बैठे हैं और दूसरी तरफ मम्मा बैठी हुई हैं।

वहाँ कोई बोलने की बात थी नहीं अतः गहन शांति और बाबा की शक्तिशाली दृष्टि ने मुझे एकदम अशरीरी बना दिया और मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि मैं इस दुनिया से दूर कहीं जा रहा हूँ। बाबा के मुख-मण्डल से शांति के प्रकम्पन व लाल प्रकाश की किरणें निकलने का मुझे स्पष्ट अनुभव हो रहा था। यह शक्तिशाली अनुभव किसी भी दुनियावी अनुभव से अलग था। करीब छह-सात मिनट तक मेरा और बाबा का मन ही मन वार्तालाप चलता रहा। मुझे संकल्प आ रहे थे कि हाँ बाबा, आप अब इस दुनिया को परिवर्तित करने के लिए आ गये हैं। अब तो मैंने आपको साकार में सम्मुख देख लिया है और मेरा यह बाकी जीवन आपको ही समर्पित है।

कुछेक क्षणों बाद मुझे ऐसी खींच हुई कि मैं बाबा की गोद में जाकर बैठ गया। बाबा मुरली में कहते भी हैं कि जब तक बच्चे बाबा की गोद नहीं लें, वर्सा प्राप्त नहीं कर सकते। वर्सा तो सभी ब्रह्मा-वत्सों को मिलता है, परन्तु यह मेरे लिए साकार बाबा द्वारा संगम का वर्सा था।

बाबा कहते थे कि ईश्वरीय जीवन का यह मतलब नहीं है कि हर समय पढ़ते ही रहो.....

मन लालायित था बाबा को सुनने के लिए।

मैं बाबा से मिलकर बेहद खुश था। बाबा ने हमसे पूछा कि क्या यात्रा सकुशल व आरामदायक रही? वास्तव में बाबा क्या बोले, यह महत्वपूर्ण नहीं था, परन्तु बाबा की आवाज सुनने को मन बेहद लालायित था। उन दिनों टेप द्वारा रिकार्डिंग व वीडियो जैसे साधन नहीं थे। अमृतवेले योग भी नहीं हुआ करता था। सुबह ५:४५ पर योग होता था व ६:०० बजे मुरली शुरू होती थी। क्लास पूरा होने पर हम बाबा व मम्मा से, मम्मा के कमरे में मिलते थे। चूंकि हम बहुत ही कम स्टूडेण्ट थे, हमें रोज़ बाबा से बहुत ही शक्तिशाली दृष्टि मिल जाती थी। सोचना भी नहीं पड़ता था। सेकण्ड में नशा चढ़ जाता था और हम खुशी से नाच उठते थे। बाद में हम भोजन पर अथवा पिकनिक पर जाते थे। कभी-कभी बैडमिन्टन खेलते थे। बाबा कहते थे कि ईश्वरीय जीवन का यह मतलब नहीं है कि हर समय पढ़ते ही रहो, इसका खेल के साथ संतुलन होना चाहिए। शाम को आठ बजे से पौने नौ बजे तक क्लास हुआ करती थी। शुरू में मम्मा वत्सों की रूहानी अवस्था के समाचार पूछती थीं और यह भी पूछती थीं कि आपसे कोई गलती तो नहीं हुई? बाबा के आने के पहले करीब १० मिनट तक मम्मा संबोधित करती थीं।

समय पर दिए सहयोग का बाबा को गहरा अहसास

सन् १९७१ में ही बाबा का मुम्बई आना हुआ। एक सज्जन ने बाबा को एक सुंदर अपार्टमेण्ट, जो मुम्बई के अच्छे इलाके में स्थित था, जब तक चाहें रहने को दिया। इस अवसर पर मैंने नेवी से छुट्टी लेकर कुछ दिन मुम्बई में बाबा के साथ बिताने का निश्चय किया। छठे दशक के प्रथम वर्षों में यज्ञ आर्थिक रूप से बड़े ही कठिन दौर से गुज़र रहा था और एक दिन ऐसा भी आया कि भण्डारी में सिर्फ पच्चीस पैसे ही रह गए थे। भोजन खाने वाले काफी लोग थे। तो निमित्त बहन ने बची हुई धनराशि के बारे में बाबा को अवगत कराया। बाबा ने तुरंत कहा कि चिन्ता मत करो, केवल ग्यारह बजे तक इन्तजार करो। ग्यारह बजे डाक आया करती थी। बाबा का विश्वास इतना पक्का था कि वे हमेशा कहा करते थे कि यज्ञ शिवबाबा का है, ब्रह्मा बाबा का नहीं। शिवबाबा ने ही इसको बनाया है, उन्हीं को इसका संचालन करना है, हमको कोई चिन्ता नहीं है। जब डाक आयी तो उस दिन एक हजार रुपये मनीआर्डर से आये। बाबा ने दिल से शुक्रिया अदा किया उस आत्मा का जिसने ऐसे वक्त में अपने धन को सफल किया। मुझे याद है कि वह एक बाँधेली बहन थी जो कि मुम्बई में रहती थी। बाबा समय पर सहयोग देने का रिटर्न कई गुणा देते थे। जब उस माता का युगल सुबह घूमने जाता था तो वो बाबा को फोन लगाती थी और बाबा उसे फोन पर मुरली सुनाते थे। कभी-कभी तो ४५ मिनट भी फोन पर लग जाते थे। कुछ भाई-बहनें नियमित रूप से इस टेलिफोन क्लास के नोट्स लेते थे। हम सभी भी नोट्स लेते थे। आवश्यकता के समय दिये सहयोग का बाबा को गहरा अहसास था।

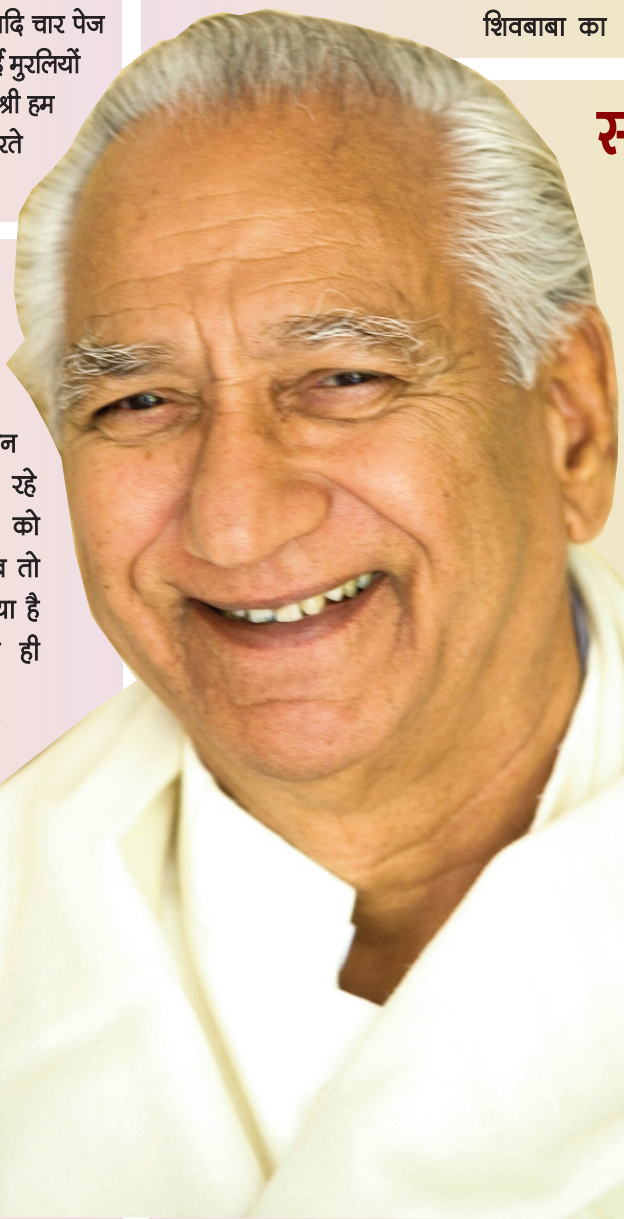

साकार बाबा हमारा मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं

जब से मैं मधुबन में हूँ, मुझे यह करीब से देखने का सौभाग्य मिला है कि कैसे दादी जी ने बाबा से जिम्मेदारी ली और कदम-कदम बाबा से श्रीमत ली। जब पहली बार २१ जनवरी, १९६९ को अव्यक्त बापदादा आए तो बाबा ने कहा कि शरीर को छोड़ना मात्र कमरा बदलने के बराबर है। बाबा ने कहा कि बाबा बच्चों की सेवा में अभी भी उपस्थित हैं जैसे पहले थे और यह कभी नहीं सोचना है कि बाबा चले गए हैं।

बाबा ने हमें यह विश्वास दिलवाया कि जब तक संगमयुग है, बाबा साथ है, केवल बाबा के रूप का परिवर्तन हुआ है। जब भी आप बाबा के कमरे में बाबा की ट्रांसलाइट की तरफ देखेंगे तो अहसास होगा कि साकार बाबा हमारा मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं।

अनुसंधान ७ वे पृष्ठ पर